पद ४२

(राग: पिलु - ताल: धुमाळी)

अवधूत भजा अवधूत। ब्रह्म होती हे भूत सहज। अवधूत भजा अवधूत। मायामल निर्धूत सहज। अवधूत भजा अवधूत ॥धु.॥ निरालंबी आलंबन किर जो। तोचि शुद्ध अति पूत॥१॥ परमहंस सनकादिक वंदिती। जगभिरत महद्भूत॥२॥ भक्तकार्य कल्पदुमगुरु हा। विधि हिर हर पदीं विनत॥३॥ प्रिय मार्ताण्डाकार एक सुख। चिन्मय ओतप्रोत॥४॥पद ४३